बी. एड. प्रथम वर्ष
सत्र - 2020 - 2021/22
विषय - समकालीन भारत एवं शिक्षा
यूनिट - 4 (d)
प्रकरण - **गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं विद्यालयी वातावरण**
व्याख्यान सं. - 08

डॉ. अमोद कुमार सिन्हा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
AND कॉलेज,
शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

भूमिका

विद्यालयी वातावरण एक बहुआयामी संप्रत्यय है। इसके निर्माण में मुख्य रूप से नेतृत्व का व्यवहार, विश्वास का स्तर, संस्कृति, अभिभावकों का सहयोग, छात्रों की शैक्षिक उपलब्धता तथा अध्यपकों की नैतिकता, कार्यनिष्ठा, प्रभाविकता, एवं संतुष्टि आदि कारक प्रभावी होते हैं। यदि ये सभी अच्छी तरह कार्य करते हैं तो विद्यालय का वातावरण उच्च कोटि का होगा अन्यथा नहीं।

विद्यालयी वातावरण के प्रकार

हॉपिन एवं क्राफ्ट **(Holpin & Craft)** ने प्रबंधन, अध्यपकों, कर्मचारियों, छात्रों, आदि में अन्तःक्रिया सम्प्रेषण व कार्यशैली के आधार पर विद्यालयी वातावरण को निम्नलिखित छः भागों में बाँटा है **:-**

1. **खुला वातावरण** - प्रकार के विद्यालय में खुलापन है। प्रधानाध्यापक या प्रबंधन द्वारा अध्यापक के किसी कार्य में बाधा नहीं डाली जाती है। सभी एक-दूसरे से मित्रवत व्यवहार करते हैं। सभी अध्यापक ख़ुशी-ख़ुशी विद्यालयों के विभिन्न कार्यों को करते हैं एवं खुद को विद्यालय से जुड़कर गौरवान्वित महसूस करते हैं।

2. **बंद वातावरण** - ऐसे विद्यालयों में प्रबंधन या प्रधानाध्यापक सर्वोपरि होता है। वह अपने अधीनस्थों पर संपूर्ण नियंत्रण रखता है। वह अध्यपकों के प्रत्येक कार्य व गतिविधि पर निगरानी रखता है। साथ ही उनकी कमजोरियों के विषय में जानकारी प्राप्त कर उनके विरुद्ध कार्यवाही का डर बैठा कर कार्य करवाता है। ऐसे में अध्यापक स्वेच्छा से कार्य नहीं कर पाते

एवं उनका अध्यापन औपचारिकता मात्र रह जाता है।

3. **नियंत्रित वातावरण** - इसमें अध्यापक अत्यंत कठोर नियंत्रण में कार्य करते हैं। प्रधानाध्यापक अहम् केंद्रित होता है, अवैयक्तिक, औपचारिकता वाला होता है। अध्यापकों से कभी-कभी वास्तविक परिस्थितियों में सही बर्ताव कर सकते हैं लेकिन उनसे सामाजिक अलगाववाद तो रहता ही है। यही कारण है की कार्य में निरंतरता के बावजूद अध्यापकों को संतुष्टि नहीं होती।

4. **स्वायत्त वातावरण** - ऐसे वातावरण में खुले वातावरण से कम खुलापन होता है। प्रधानाध्यापक सच्चा व लचीला होता है तथा अध्यपकों के दिशानिर्देशन हेतु नियमों का निर्धारण करता है। अध्यपकों को अन्तःक्रिया करने की पूर्ण स्वंत्रतता होती है। वह अपना कार्य अकेले या साथ दोनो प्रकार से करता है। परिणामस्वरूप उद्देश्यों की प्राप्ति शीघ्रतापूर्वक होती है।

5. **पैतृक वातावरण** - यह आंशिक रूप से बंद वातावरण के समान है। प्रधानध्यापक प्रत्येक स्थान पर अध्यापकों को परखता है, उन्हें कार्य संबंधी सलाह देता है। विद्यालय की सारी गतिविधियाँ उसके द्वारा ही नियंत्रित होती हैं।

6. **पारिवारिक वातावरण** - ऐसे वातावरण में मित्रतापूर्ण व्यवहार पाया जाता है। सभी कार्य मिलजुलकर किये जाते हैं। अच्छे कार्य के लिए अध्यापकों को प्रोत्साहित किया जाता है। सभी अध्यापक एक बड़े सुखी परिवार का भाग होते हैं। प्रधानाध्यपक सदैव अध्यापकों की भलाई के लिए कार्य करता है।

उपरोक्त वर्णित प्रकारों में खुला वातावरण श्रेष्ठ है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है की इसमें आत्मनिर्भरता अधिक होती है। ऐसे वातावरण में समाज विद्यालय को संपूर्ण संसाधन मुहैया करवाता है। बदले में विद्यालय समाज को वांछित नागरिक देता है जो समाज आवश्यकतानुसार सामाजिक, राजनैतिक सांस्कृतिक शक्तियों से भरपूर होता है।

To be continued...